भगत रविदास – सबद ३१

जे ओहु अठसठि तीरथ न्नावै ॥

रागु गोंड, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७५

जे ओहु अठसठि तीरथ न्नावै ॥
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥
साध का निंदकु कैसे तरै ॥
सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥
अरपै नारि सीगार समेति ॥
सगली सिंमृति स्रवनी सुनै ॥
करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥
जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥
भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥
अपना बिगारि बिरांँना सांँढै ॥
करै निंद बहु जोनी हांँढै ॥३॥
निंदा कहा करहु संसारा ॥
निंदक का परगटि पाहारा ॥
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४॥२॥११॥७॥२॥४९॥ जोड़ु ॥

सार: निंदा मौखिक हिंसा का एक हानिकारक रूप है जो दूसरों को चोट पहुँचाने के लिए सच को तोड़-मरोड़ देता है। यह अक्सर असुरक्षा और द्वेष की भावना से उतपन्न होता है जिससे व्यक्ति को क्षणिक और भ्रामक श्रेष्ठता का अनुभव होता है। हालाँकि, निंदक कुछ समय के लिए अपने छल का

आनंद ले सकते हैं, यह व्यवहार अंततः उनकी नैतिकता और विश्वसनीयता को क्षति पहुँचाता है। हमारे कल्याण और आत्मिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम निंदा से होने वाले नुक़सान को पहचानें और ऐसे संवाद को बढ़ावा दें जो ईमानदारी और सम्मान को पोषित करे।

जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥

यदि कोई अड़सठ पवित्र तीर्थ स्थलों पर स्नान करे। यह बाहरी शारीरिक शुद्धि के माध्यम से नकारात्मक कर्मों और दुर्भावनाओं को धोने के प्रयास को दर्शाता है।

जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥

यदि कोई बारह पत्थर रूपी धार्मिक प्रतीकों की पूजा करे। यह भौतिक प्रतीकों और मूर्तियों की कर्मकांडीय पूजा का प्रतीक है।

जे ओहु कूप तटा देवावै ॥

यदि कोई कुएँ और तालाब सार्वजनिक कल्याण के लिए समर्पित करे। यह ऐसी परोपकारिता को दर्शाता है जिसका उद्देश्य प्रतिष्ठा बढ़ाना और व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना हो।

करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥

यदि कोई निंदा करता है तब अन्य सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। यह प्रकाश डालता है कि नकारात्मकता, सकारात्मक कार्यों की प्रगति को निष्फल कर सकती है। (१)

साध का निंदकु कैसे तरै ॥

जो आत्मिक चेतना की अवस्था की निंदा करते हैं, वह अपनी मानसिकता से कैसे पार उतर सकते हैं? यह प्रश्न करता है कि वास्तविकता का विरोध करने वाला मन की स्पष्टता कैसे प्राप्त कर सकता है।

सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥
निश्चित रूप से जान लें कि ऐसा मन खाई में गिरता है। यहाँ नरक को अहंकार और नकारात्मकता से उत्पन्न मानसिक यातना के रूप में परिभाषित किया गया है। (१)(विराम)

जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥
यदि कोई सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में अनुष्ठान करे। यह उन अंधविश्वासों की ओर संकेत है जिनमें विशेष समय और स्थान पर पूजा करने से नकारात्मकता दूर होती है और सकारात्मकता प्रवाहित होती है।

अरपै नारि सीगार समेति ॥
अपने जीवनसाथी को गहनों से सजाकर अर्पित करे। यह सबसे मूलयवान बाहरी बंधनों का त्याग करके, भक्ति-भाव दिखाने का प्रतीक है।

सगली सिंमृति स्रवनी सुनै ॥
सभी शास्त्रों को वह अपने कानों से सुनते हैं। यह आंतरिक परिवर्तन के बिना धार्मिक ज्ञान को समझने की ओर इशारा करता है।

करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥
यदि कोई निंदा करता है तब उसके कर्म गुणवान नहीं रह जाते। यह रेखांकित करता है कि वास्तविक मूल्य भावना और नीयत में है, कोई भी कर्मकांड कारण-प्रभाव के प्राकृतिक नियम को नहीं बदल सकता। (२)

जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥
यदि कोई असंख्य भोग और भोज आयोजित करे। यह ऐसी उदारता है जो दूसरों की सेवा करने के बजाय कृपा पाने के इरादे से की गई भलाई को दर्शाता है।

भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥

यदि कोई भूमि दान कर सार्वजनिक प्रशंसा प्राप्त करे। यह उदारता के कामों से सामाजिक मान्यता और आत्म- महत्त्व की आकांक्षा को दर्शाता है।

अपना बिगारि बिराँना साँढै ॥

यदि कोई दूसरों की मदद करने के लिए अपने हितों को भी नुक़सान पहुँचाए, फिर भी यदि मन की सोच ज़हरीली है तब अत्यधिक परोपकार भी अपना मूल्य खो देता है।

करै निंद बहु जोनी हाँढै ॥३॥

यदि कोई निंदा करता है तब उसे अनगिनत अस्थिरता के चक्रों से गुज़रना पड़ता है। अनेक जन्म के कई चक्र मन की बार-बार होने वाली भ्रम और पीड़ा की अवस्थाओं को अनुभव करने के प्रतीक हैं। (३)

निंदा कहा करहु संसारा ॥

तुम दुनिया में दूसरों की निंदा क्यों करते हो? यह प्रश्न है, मनुष्यों की एक-दूसरे को आंकने की प्रवृत्ति के बारे में।

निंदक का परगटि पाहारा ॥

निंदक का स्वभाव स्पष्ट रूप से दिख जाता है। यह बताता है कि भीतर की ज़हरीली सोच को ज़्यादा देर तक छिपाया नहीं जा सकता, यह अंततः कर्मों में सामने आ ही जाती है।

निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥

निंदा के परिणामों पर विचार करते हुए, यह सोचें कि इसे कैसे सुधारा जाए।

कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४॥२॥११॥७॥२॥४९॥ जोड़ु ॥
रविदास कहते हैं कि बुरी नीयत से किए गए बुरे काम नकारात्मकता को आकर्षित करते हैं जिससे अंततः दुःख ही मिलता है। (४)(२)(११)(७)(२)(४९)(जोड़)

तत्त्व: भक्त रविदास, यह स्पष्ट करते हैं कि नकारात्मक आंतरिक अवस्था को केवल बाहरी पुण्य कर्मों से संतुलित नहीं किया जा सकता। जब मन द्वेष, भय या असत्य से ग्रस्त होता है तब सबसे उदार और नैतिक प्रतीत होने वाले कर्म भी अपना असर खो देते हैं। भले ही ये काम ऊपर से नैतिक या परोपकारी लगें लेकिन भीतरी तौर से वह वास्तविकता में ग़लत होते हैं और उनसे मन में स्पष्टता, शांति या स्थायी संतुष्टि नहीं मिल पाती।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com